प्रश्न – परिकल्पना से आप क्या समझते हैं? परिकल्पना एवं समस्या में क्या अन्तर है?

उत्तर → किसी भी अनुसंधान में परिकल्पना एक नींव का काम करता है। उसी नींव पर अनुसंधान का पूरा महल खड़ा रहता है। ठीक उसी प्रकार अनुसंधान भी बहुत कुछ परिकल्पना पर निर्भर करता है। साधारण बोल-चाल की भाषा में परिकल्पना के संबंध में यह कहा जाता है कि वास्तविक अध्ययन शुरू करने से पहले अध्ययनकर्ता एक अनुमान लगाता है कि अध्ययन के बाद परिणाम क्या होगा? इसी अनुमान को ही परिकल्पना की संज्ञा दी जाती है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि परिकल्पना एक अनुमानिक कथन होता है।

परिकल्पना के स्वरूप को समझने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषा को जान लेना भी जरूरी हो जाता है:—

Kerlinger, 1986; ने परिकल्पना को परिभाषित करते हुए बतलाया कि "परिकल्पना एक अनुमानात्मक कथन है जो दो या दो से अधिक चरों के बीच के सह संबंध को बतलाता है।"

M.C. Guigan, 1962; ने परिकल्पना को परिभाषित करते हुए बतलाया कि "परिकल्पना एक परीक्षणीय कथन है जो दो या दो से अधिक चरों के बीच के संभावित संबंध को बतलाता है।"

Chaplin, 1975; ने परिकल्पना को परिभाषित करते हुए बतलाया कि "परिकल्पना एक अभिधारणा है जो अंतरिम व्याख्या का कार्य करती है। दूसरे दृष्टिकोण से परिकल्पना एक प्रश्न है जिसका उत्तर प्रयोज्य या निरीक्षणों की श्रृंखला द्वारा किया जाता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं का जब विश्लेषण किया जाता है तो इसके अंतर्गत मुख्यतः से निम्नलिखित बातें देखने को मिलती है:—

(1) परिकल्पना एक अनुमानिक प्रस्तान है, जिसका निर्माण, अध्ययन, शुरु करने के पहले किया जाता है।

(2) परिकल्पना में दो या दो से अधिक चरों के बीच के संबंध का निर्माण किया जाता है।

(3) परिकल्पना का आधार दैनिक जीवन का निरीक्षण या पूर्व का अध्ययन किया जाता है।

(4) परिकल्पना एक अस्थायी कथन है, जो परीक्षण के बाद स्थाई बनता है।

(5) परिकल्पना परीक्षण के बाद स्वीकृत या अस्वीकृत होता है।

परिकल्पना एवं समस्या में अन्तर :—

जहाँ तक परिकल्पना या समस्या का प्रश्न है तो दोनों का उद्देश्य मूलतः एक ही होता है। दोनों समान दिशा में निर्देशित होती है। इस प्रकार इन दोनों के बीच कुछ न कुछ समानता है, लेकिन इन समानता के बाद भी समस्या तथा परिकल्पना के स्वरूप, कार्य विधि तथा उपयोगिता में कई तरह के अंतर पाये जाते हैं, जिनकी व्याख्या इस प्रकार है :—

(1) समस्या किसी भी शोध का पहला चरण होता है, जबकि परिकल्पना शोध का दूसरा चरण होता है। कोई भी अनुसंधानकर्ता जब अनुसंधान करता है तो सबसे पहले किसी न किसी समस्या को ढूँढता है, और फिर उसके बाद समस्या के समाधान के लिए परिकल्पना का निर्माण करता है। उदाहरण स्वरूप - कैंसर क्यों होता है? यह एक समस्या हुआ। धूम्रपान के कारण कैंसर होता है, यह एक परिकल्पना हुआ। इस प्रकार स्पष्ट है कि पहले समस्या आती है और तब परिकल्पना का निर्माण होता है।

(2) समस्या के बिना अनुसंधान कार्य संभव नहीं है, जबकि परिकल्पना के बिना संभव है। कोई भी अनुसंधानकर्ता जब अनुसंधान करता है तो इसके लिए एक समस्या का निर्धारण करना जरूरी हो जाता है। जब तक समस्या निर्धारित

Scanned with CamScanner

नहीं होती तब तक शोध कार्य प्रारंभ नहीं होता है, जबकि परिकल्पना के अभाव में भी अनुसंधान संभव है। Kerlinger, 1978; ने कहा भी है यद्यपि शोध को वैज्ञानिक ढंग से करने के लिए परिकल्पना बहुत आवश्यक है। तथापि परिकल्पना के अभाव में शोध करना संभव है।

(3) समस्या एक प्रश्नात्मक कथन है, जबकि परिकल्पना आकर एक ~~कथनात्मक~~ काल्पनिक उत्तर है। उदाहरण स्वरूप- कैंसर क्यों होता है? यह एक प्रश्न है। कैंसर धूम्रपान करने से होता है। यह इस प्रश्न का उत्तर है।

(4) समस्या हमेशा प्रश्नसूचक वाक्य के रूप में रहती है, जबकि परिकल्पना कथन के रूप में होती है। उदाहरणस्वरूप- कैंसर क्यों होता है? उत्पादन क्यों घटता है? ये सभी प्रश्नसूचक वाक्य है। ठीक इसके विपरीत धूम्रपान के कारण कैंसर होता है। थकान के कारण उत्पादन घटता है। ये सभी कथन परिकल्पना के उदाहरण हैं।

(5) समस्या समाधान योग्य होती है जबकि परिकल्पना परीक्षण योग्य होती है। वैज्ञानिक समस्या में समाधान योग्यता का गुण आवश्यक है। समस्या ऐसी हो जिसका समाधान अनुभव के आधार पर किया जा सके। उदाहरणस्वरूप - उत्पादन क्यों घटता है? इस समस्या का समाधान अनुभव के आधार पर संभव है। जबकि परिकल्पना में परीक्षण योग्यता का गुण होना आवश्यक है। परिकल्पना ऐसी हो जिसको सत्य एवं असत्य में प्रमाणित किया जा सके।

(6) समस्या के क्षेत्र काफी व्यापक होता है, जबकि परिकल्पना का क्षेत्र काफी सीमित होता है। उदाहरणस्वरूप- कैंसर क्यों होता है? उत्पादन क्यों घटता है? इन समस्याओं का क्षेत्र काफी व्यापक होता है। ठीक विपरीत शोध परिकल्पना आसानी होती है। धूम्रपान के कारण कैंसर होता है। थकान के कारण उत्पादन घटता है। इन परिकल्पनाओं का क्षेत्र काफी सीमित है।

Scanned with CamScanner

(7) समस्या की कोई निश्चित दिशा नहीं होती है, जबकि परिकल्पना की एक निश्चित दिशा होती है। समस्या के अव्याप्ति होने के कारण उसमें कोई निश्चित दिशा नहीं होती है। यानि वह दिशाहीन होती है। दूसरी ओर अव्याप्ति होने के कारण परिकल्पना की एक निश्चित दिशा होती है। उदाहरण स्वरूप - धूम्रपान के कारण कैंसर होता है। इसमें एक निश्चित दिशा है।

(8) समस्या अमूर्त होता है, जबकि परिकल्पना मूर्त होती है। अव्याप्ति तथा दिशा रहित होने के कारण ही समस्या अमूर्त होती है। उदाहरण स्वरूप - उत्पादन क्यों घटता है? कैंसर क्यों होता है? यह अमूर्त है। दूसरी ओर अव्याप्ति तथा दिशा निर्देशित होने के कारण परिकल्पना अधिक मूर्त होती है।

(9) समस्या अनिश्चित होती है, जबकि परिकल्पना निश्चित होती है। समस्या का क्षेत्र अधिक व्यापक होता है इसमें कोई निश्चित दिशा नहीं होती है इसलिए यह अनिश्चित होता है दूसरी ओर परिकल्पना का क्षेत्र सीमित होता है। इसमें एक दिशा होती है इसलिए यह निश्चित होती है।

(10) समस्या का अस्तित्व परिकल्पना पर आधारित नहीं है, जबकि परिकल्पना का अस्तित्व समस्या पर आधारित होता है। समस्या के लिए परिकल्पना का होना जरूरी नहीं है। जबकि ~~परिकल्पना~~ परिकल्पना के लिए समस्या का होना जरूरी है।

इस प्रकार अंत में निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं कि समस्या एवं परिकल्पना में कई भिन्नता है। इन भिन्नताओं के होते हुए भी इन दोनों के बीच गहरा संबंध है। वस्तुतः ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

Dr. Om Prakash Keshri
P.G. Dept. of Psychology
Maharaja College, ARA.

Scanned with CamScanner